वेदों की खुशबू

ओ३म्

वेद सब के लिए

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values and Modern Thinking

Monthly Magazine	Issue 62	Year 6	Volume 10	July 2017 Chandigarh	Page 24	मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual - Rs. 120-see page 6

जीवन वही है जो दूसरों के लिये भी जिया जाये।

अथर्व वेद में कहा है,'' जीवन जीवन तभी है जब दूसरों के साथ मिल कर रहा जाय। मनुष्य अकेला नहीं रह सकता वह एक समाजिक प्राणी है। भगवान उन्ही को प्यार करता है जो उसके बनाये प्राणियों से प्यार करते है, उस में सभी आ जाते हैं चाहे पक्षी, जानवर या मनुष्य। वही व्यक्ति यश का पात्र है जो कि अपने परिवार का दायरा बड़ा कर के जीवन जीता है। जहां व्यक्ति एक और अपने माता पिता, भाई बहनों, पत्नि व बच्चों से जुड़ा हुआ है, वहीं दूसरी और समाज के हर प्राणी के साथ भी उसका सम्बन्ध है। व्यक्ति का सम्बन्ध जहां अपने पूर्बजों के साथ है वहीं अपने आने वाली सन्तान से भी है। इसलिये मनुष्य का धर्म है कि अपने परिवारिक सम्बन्धों से उपर उठकर समाज के लिये जिये, काम करे और यदि आवश्यकता पड़े तो प्राण नियोछावर करने में भी हिचकचाहट न करे।

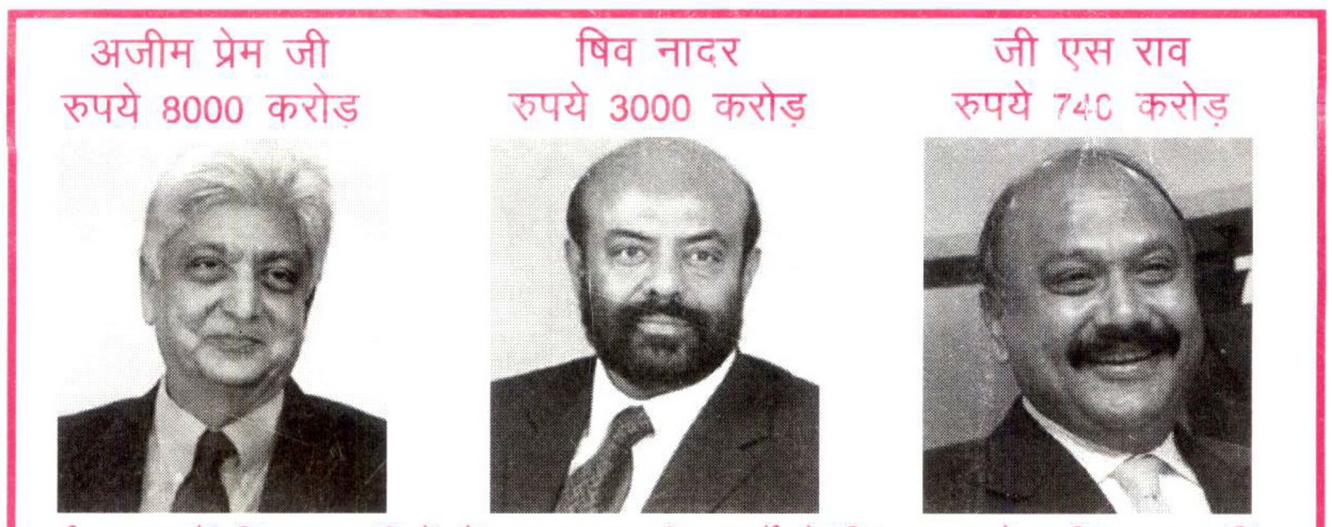

वर्ष 2016 में जिन भारतीयों ने कल्याणकारी कार्यों मे लिए सब से अधिक दान दिया

वसुधैव कटुम्बकम––सारा विश्व एक परिवार है, इस वेद की सुक्ती का संदेश है–– हे मनुष्य अपने परिवारिक सम्बन्धों से उपर उठकर, सारे विश्व को एक परिवार समझो। उस परिवार में सभी प्राणी आ जाते हैं। भारतीय संस्कृति की दिशा त्याग है, न की भोग। अर्थात त्याग भाव से भोग। शतेन त्यक्तेन भुंजीथाः। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज के लिये बनाये नियमों में कहा है–– मनुष्य अपनी ही उन्नती में सन्तुष्ट न रहकर सबकी उन्नती में अपनी उन्नती समझे। महाभारत युग की कथा इस भावना को बहुत सुन्दर व्यक्त कर रही है। दुर्योधन द्वारा पाण्डवों को दिये गये वनवास के दौरान एक वर्ष के लिये कुन्ती समेत सभी पाण्डवों को भेष बदल कर रहना था। एक दिन कुन्ती जिस घर में काम करती थी, उस की मालकिन बहुत रो रही थी। जब कुन्ती ने उस औरत से, जिस का पति मर चुका था, इस तरह रोने का कारण पूछा, तो उस ने बताया––––– ''उस कस्बे के बाहर एक बहुत शक्तिशाली राक्षस रहता है । पहले तो वह मनमाने ढंग से कभी भी आकर आक्रमण कर देता व मनुष्यों, पशुओं को खा जाता व बहुत नुकसान करता था पर जब कस्बे के मुख्य लोग उसे अपना अनुग्रह लेकर मिले तो वह इस बात पर राज़ी हो गया

Contact :
BHARTENDU SOOD
Editor, Publisher & Printer
231, Sec. 45-A, Chandigarh-160047
Tel.: 0172-2662870, Mob.: +91-9217970381
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

कि वह मनमाने ढंग से आक्रमण कर के मनुष्यों, पशुओ को नहीं खायेगा व कस्बे वालों में से एक व्यक्ति महीने में एक बार पूरे महीने का राशन लेकर उस के पास जायेगा और वह व्यक्ति भी उस के भोजन का अंग होगा। आज मेरे पुत्र की बारी है जो कि मेरा इकलौता पुत्र है। मै न केवल पुत्रहीन हो जाउंगी बल्कि हमारे घर में कोई भी पुरूष नहीं रहेगा।"

कुन्ती का हृदय उस की हालत जानकर पसीज गया। कृतझता से दबी हुई वह अपने मन में सोचने लगी----" मेरे तो पांच पुत्र हैं, अगर एक चला भी गया तब भी चार पुत्र रह जायेंगे। पर इस बेचारी का तो ले देकर ऐक ही पुत्र है जब उस को राक्षस खा जायेगा तो बिन सन्तान रह जायेगी, मुझे अवश्य इस की सहायता करनी चाहिये।

उसने घर जा कर पुत्रों से बात की तो वे सभी ऐसा अवसर पाने के लिये आतुर नज़र आये, पर कुन्ती ने भीम को चुना व भीम ने उस शक्तिशाली राक्षस को मार कर सब को राहत दिलाई। पर जो बात यहां देखने वाली है वह है कि कुन्ती समाज के ही दूसरे प्राणी के हित में अपना बेटा भी कुरबान करने को तैयार हो गई।

जैसा हम जानते हैं पिछली सदी में हमारे देश में ऐसी बड़ी बिमारियाँ प्लेग व हैजा आदी अक्सर आती थी जिस में लाखों लोगों के प्राण अक्सर चले जाते थे यही नहीं जो बीमारों के इलाज के लिये जाते थे उनको भी अक्सर ये भयानक रोग अपने शकंजे में ले लेते थे पर फिर भी जब ऐसी आपदायें आती थी तो लोग हजारों में दल बनाकर, अपने प्राणों को खतरे में डाल कर, बीमारों के इलाज व सहायता के लिये निकल जाते थे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती, स्वामी श्रधानन्द व गुरू नानक देव जैसे कई महान व्यक्ति हुए जिन्होने जब देखा कि दुनिया अज्ञान व अन्धविश्वासों के कारण पीड़ित है तो अपने सब सुख त्याग कर, अपने प्राणों की परवाह किये बिना, लोगों को ठीक ज्ञान का संदेश देने के लिये निकल पड़े। इसे कहते हैं अपने परिवार का दायरा बड़ा करना।

यही नही हम समय समय पर देखतें हैं, बहुत से ऐसे व्यक्ति हैं जो अपनी कमाई का बहुत वड़ा हिस्सा दूसरो के सुख के लिये सड़के, धर्मशालायें, विद्यालय, हस्पताल, पानी के स्रोत बनाने के लिये दे देते हैं।

अपने पड़ोसी के प्रति प्यार की भावना, विश्व बन्धुत्व की भावना, मनुष्य के प्रति मैत्री प्यार की व त्याग की भावना वैदिक मूल्यों का मुख्य अंग है। मानवीय सम्बन्धो का दायरा सिर्फ अपना घर ही नहीं किन्तु सारा समाज है।

जीवन तभी है जो सब के साथ मिल कर जिया जाये और दूसरों के काम भी आये। प्यार वह है जो हमारे स्वार्थ व दूसरे अमानवीय गुणों को दूर कर दे व हमारे हृदय पटल को उन सभी के लिये करूणा व संवेदना से भर दे, जो हमारे जितने भाग्यशाली नहीं।

वेद कहते हैं स्वस्ति पन्था मनु चरेम सुर्याचन्द्रमसाविव-- हम सूर्य और चन्द्रमा की तरह सदैव कल्याणकारी मार्ग पर चलते रहें।

विदुर नीति में कहा है,

परिवार के लिये, निजी स्वार्थ व हित को त्याग़ दें,

समाज के लिये, पारिवारिक स्वार्थ व हित को त्याग़ दें,

व देश के लिये, समाज के हित को त्याग़ दें,

*****

पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 120 रूपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172-2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दें
2. आप चैक या कैश निम्न बैंक मे जमा करवा सकते हैं :-
   Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 **IFS Code - CBIN0280414**
   Bhartendu soood, IDBI Bank - 0272104000055550 **IFS Code - IBKL0000272**
   Bhartendu Sood, Punjab & Sindh Bank - 02421000021195, **IFS Code - PSIB0000242**
3. आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रूचिकर लगे।
5. पैसे जमा करवा कर सूचित अवश्य कर दें।

यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया **at par** का चैक भेज दे।

सन्त वही जो लोक सेवा के लिये जीवन न्योछावर कर दे.---ईसाई धर्म की बहुत अच्छी बात

ईसाई धर्म के मुखिया पोप फ्रासिंस ने एक बहुत अच्छी घोषणा की है कि सन्त की उपाधी उसी को मिलेगी जो लोक सेवा के लिये अपना जीवन न्योछावर करदे। वैसे तो यह प्रथा ईसाई धर्म में पहले से ही है, उदाहरण के लिये मदर टरेसा को सन्त की उपाधी उनकी गरीबों के प्रति अपार सेवा को देखते हुये ही दी गई थी, परन्तु पोप फ्रासिंस के अनुसार इस नियम का पालन अब और सखती से दिया गया है। कोई मुझ से पूछे तो यह बहुत ही अव्छी बात है। संस्कृत के दो अक्षर पढ़ कर, कोरी ज्ञान की बाते करने वालों से, जिनकी हमारे हिन्दु समाज में और खास कर आर्य समाजों में भरमार है, सेवा मे लगे व्यक्ति कहीं अधिक आदरयोग और संत कहलाने योग्य है।

महात्मा आनन्द स्वामी के समय तक हमारे आर्य समाज में भी महात्मा उसी को कहते थे जो दुखियों की सेवा में जीवन लगा देते थें। आर्य समाज के दल तुरन्त वहां पहुंच जाते थे जहां कहीं बिमारी फैली हो, भूकम्प आया हो या अकाल की स्थिती बन गई हो। महात्मा आनन्द स्वामी के जीवन की एक घटना है कि उनका दल वहां पर काम कर रहा था जहां पलेग फैली हुई थी। अपनी जान की परवाह किये बिना एक आर्य समाज का सेवक पलेग से पीड़ित की जान बचाने के लिये उसकी गिलटी अपने दांतो से काट दी। सच्चाई यह है कि हमारे हिन्दु समाज में जहां हमारे पडिंत थोड़ी टुटी फूटी संस्कृत का ज्ञान पाकर या ब्राहम्ण या महंत के परिवार में जन्म लेकर, सब समाजिक बुराईयों के जन्मदाता थे, आर्य समाज ने दुखियों की सेवा , दया, करूणा को ज्ञान से भी उपर स्थान देकर ब्राहम्ण और महात्मा की नई परिभाषा दी थी। हमारे सभी स्वामी ऐसे ही हुआ करते थें जिनका बहुत त्याग पूर्ण जीवन होता था । दीना नगर मठ के संस्थापक स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी उस का एक उदाहरण है। हमारे पडित अभी भी बुराईयां फैलाने में लगे हुये है। इस से दुख देने की बात और क्या हो सकती कि 15 दिन पहले ही हरियाणा मैं जब दलितो ने हवन करना चाहा तो वहीं के पडिंत ने उनको रोका और अपमान किया। कहां है वह आर्य समाज जो ऐसे समय पर मोर्चा खोल देता था। ऐतवार के दिन आर्य समाज खोल कर हवन कर लिया इस से आर्य समाज नहीं जागेगी या फिुर सबके हाथ में हवन की थाली पकड़ा दी। यह तो कौरा एक कर्मकाण्ड है। इस से गरीबों ओर असहायों के जीवन को नई दिशा नहीं मिल सकती।

आहिस्ता आहिस्ता आर्य समाज स्वामी दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हंसराज महात्मा आनन्द स्वामी के दिखाये रास्ते से हट गया है। और आज हमारे सन्त महात्मा वे हैं जो गुरूकुलों में संस्कृत पढ़कर ज्ञान की बड़ी बाते करते हैं। वेदों को नये से नये अर्थ दे कर अपने ज्ञान को दरशाते हैं और अपने जीवन में सेवा की भावना या फिर आचार विहार की जरूरत ही न समझे। इसी लिये समाज का पतन हो गया।

बजाये इसके कि ईसाई मिशनरियों से हम कुछ सीखें, हम उन्हें बुरा भला कह कर ही सन्तुष्ट हो जाते है। किसी दुखी असहाय को जो सहारा दे देता है, वही उसके लिये पूजनिय हो जाता है, कोरी ज्ञान की बातें कि यर्जुवेद के उस मन्त्र में यह कहाँ है उस से उस असहाय को क्या लेना? बात तब है जब उस मन्त्र में कही बात के अनुसार आप दुखियों का पतितों कर जीवन बदलें जैसे स्वामी दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हंसराज ने किया था।

आवश्यकता धर्म के इस रूप की है ———जैसे सुप्रसिद्ध लेखक श्री सीताराम गुप्ता का यह लेख बता रहा है

तेज़ बारिष हो रही थी। इस तेज़ बारिष में एक कुश्ट रोगी खुले में असहाय पड़ा हुआ था और बुरी तरह से कराह रहा था। उसकी मदद को कोई आगे नहीं आ रहा था। ऐसे में वहाँ से गुज़रने वाला एक व्यक्ति इस कुश्ट रोगी की दयनीय दषा देखकर अंदर तक हिल गया। उसकी आंखों से आंसू बहने लगे। वो बस यही सोच रहा था कि इस कुश्ट रोगी की जगह अगर वो होता तो? इस घटना

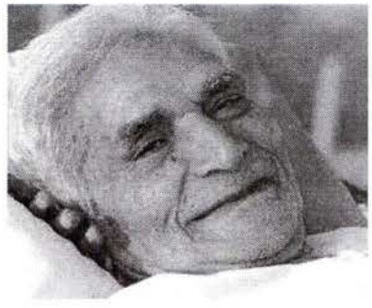

ने उसे इतना प्रभावित किया कि उसने उसी क्षण से जीवन भर कुश्ट रोगियों की सेवा करने का व्रत ले लिया। उसने उस कुश्ट रोगी को उठाया और अपने घर की ओर चल पड़ा। उसने कुश्ट रोगियों की सेवा और चिकित्सा करने का व्रत तो ले लिया लेकिन वो ख़ुद नहीं जानता था कि कुश्ट रोग कैसे होता है और इसका उपचार कैसे किया जाता है? उस दिन के बाद से वो कुश्ट रोग और उसके उपचार के अध्ययन में जुट गया। हमारे समाज में कुश्ट रोगियों को उपचार के दौरान अथवा बाद में भी आसानी से स्वीकार नहीं किया जाता अतः उनका पुनर्वास भी ज़रूरी था अतः उसने महाराष्ट्र के चंद्रपुर ज़िले के घने जंगलों में आनंदवन नामक एक आश्रम की स्थापना की ताकि कुश्ट रोगियों का उपचार ही नहीं उनका पुनर्वास भी किया जा सके।

वो चाहता था कि कुश्ट रोग का शीघ्र ही कोई अच्छा सा उपचार मिल जाए। इसके लिए वो लगातार प्रयोग करता रहता रहा। एक बार तो उसने कुष्ट रोग के बैक्टीरिया को चिकित्सीय प्रयोग के लिए स्वयं अपने शरीर में ही प्रविष्ट करा लिया ताकि कुष्ट रोग पर उचित शोध कार्य करके शीघ्र इसके उपचार में सफलता प्राप्त कर सके। कुश्ट रोगियों के इस हमदर्द व मानवता के महान सेवक का नाम था मुरलीधर देवीदास आमटे जिन्हें अधिकांष लोग बाबा आमटे के नाम से जानते हैं। गाँधीजी जिन्होंने स्वयं कुश्ट रागियों के उपचार व पुनर्वास के लिए बहुत काम किया ने कुश्ट रोग के क्षेत्र में बाबा आमटे के अथक प्रयासों के लिए उन्हें अभय साधक कह कर पुकारा। बाबा आमटे का महत्त्व मात्र इसलिए नहीं है कि उन्होंने अपना सारा जीवन कुष्ट रोगियों की सेवा और उनके पुनर्वास में लगा दिया अपितु इसलिए अधिक है कि इसके लिए वो अपने शरीर के साथ भयंकर प्रयोग करने व अपने प्राणों को संकट में डालने से भी नहीं हिचकिचाए। वो सचमुच एक महान योद्धा थे। दुर्लभ होते हैं ऐसे निडर योद्धा व अभय साधक। 9 फरवरी सन् 2008 को बाबा आमटे इस नष्वर संसार से विदा हो गए लेकिन उनका समस्त परिवार आज भी उनके इस महान कार्य के लिए निस्स्वार्थ भाव से सेवा में रत है।

इन्हें कहते हैं संत

*****

Swami Dayanand Saraswati

1. **Was the tallest reformer of Hindu society of the nineteenth century who not only talked of widow remarriage but strongly advocated for their education and initiated steps for that. What he preached in the 19th century was adopted by our Govt. fifty years after independence whether gender equality or education of girls.**
2. Founded Arya Samaj in 1875 with a prime objective to end ignorance and spread knowledge.
3. He reinvented Vedas and was the profound scholar of Vedas and Sanskrit Viyakaran. **His interpretation of Vedas ended many myths about the message contained in Vedas.**
4. **Was the first to give a call for "Swarajya" in 1876 I.e. India is for Indians.**
5. **Former president of India S. Radhakrishnan called him the ' the maker of modern India'**

Learning to nuance envy and jealousy

Neela Sood

A jealous person loses his capacity to think right, he is engrossed in planning his rival's downfall.

Duryodhana and Karna are two important characters in the Mahabharata.

Duryodhana was the eldest son of King Dhritrashtra and Karna was the illegitimate and abandoned son of Kunti, reared in a poor, 'low caste' family.

Despite such a big gap in their backgrounds, both Duryodhana and Karna shared a beautiful relationship of friendship that has few parallels in myth or history. Duryodhana possessed exceptional physical strength and had acquired expert ise in mace-wielding and wrestling, but he could never get the better of Bhima, the second of the Pandava brothers.

Likewise, Karna, gifted with exceptional skill in the use of bows and arrows had an invincible foe in Arjuna. This common enmity with the Pandavas brought Duryodhana and Karna together and their urge to show down their rivals was so overwhelming that nothing short of their rivals' blood could satisfy them.

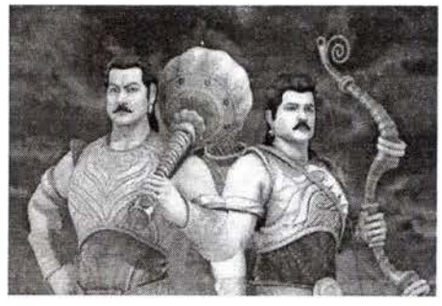

But there was a marked difference in their approach. Duryodhana was driven by jealousy, which made him adopt sordid means including poisoning, to eliminate Bhima. On the other hand, Karna was driven by envy and it was this spirit to surpass Arjuna that made him constantly hone his skills in the use of weapons. But he never used ignoble means. Indeed, he even refrained from killing Arjuna at one point, because it would have not been on honourable terms.

There is a thin line of distinction between jealousy and envy but it makes a lot of difference in practicle life. According to me, a jealous person loses his capacity to think right, he is so engrossed in planning his rival's downfall. Jealousy not only reduces a person to a mental wreck but leaves him low in self-confidence, also. But the envious one strives hard to achieve his goal and when the opportunity comes he goes all out, like Karna.

Today we face competition in every sphere of life. Whatever may be our profession, vocation or calling, we find people around who are racing ahead of us and it is but natural for us to brim with the spirit of competition to overcome them. But what is important is that we are not so overwhelmed by this competitive urge as to become jealous and in the process become blind to the means and methods to reach our goals. It is also true that downfall and defeat of the moral values have forced us to ignore the means and keep the end in view. This success is infact a defeat.

Having subordinated our religious and moral values to the gains of commercial/career achievements, we are failing to repeat the fruit of our success as some hollowness continues to haunt us. For example a very successful business executive has quite often strained relationships with his wife. He suffers with a feeling of guilt for ignoring his parents when they needed him most.

Besides imbalance in life, this commercial activism is leading to corruption, immoral activities, frauds and many other criminal acts in the society.

Therefore, while setting up our career goals it is very important to understand that success requires the sustained efforts and sincerity of purpose. If it comes from backdoor, it will be transient and momentary and one has to face legal and moral consequences sooner or later. Jealousy may prompt you to hazard in disguise , envy will lead you to enduring success.

अध्यात्मबाद क्या है ?

ईश्वर की संतानो के साथ बुरा व्यवहार ईश निन्दा

डेसमंड टूटू

मैं एक खूबसूरत घरती में रहता हूं। जिसे ईश्वर ने महान प्राकृतिक साधनो से संपन्न किया है । विस्तृत भूमी, पहाड़, गुनगुनाती चिड़िया, नीले आसमान में चमकते सितारे, उज्जवल और सुनहरी धूप। वहां बहुत सी अच्छी चीजें हैं जो हमें ईश्वर से उपहार में मिली है। वहां पर हर एक के पास प्रयाप्त साधन है। ईश्वर ने ये सब मनुष्य के प्रयोग के लिये दिये हैं ताकि वह इनका आन्नद उठा सके।

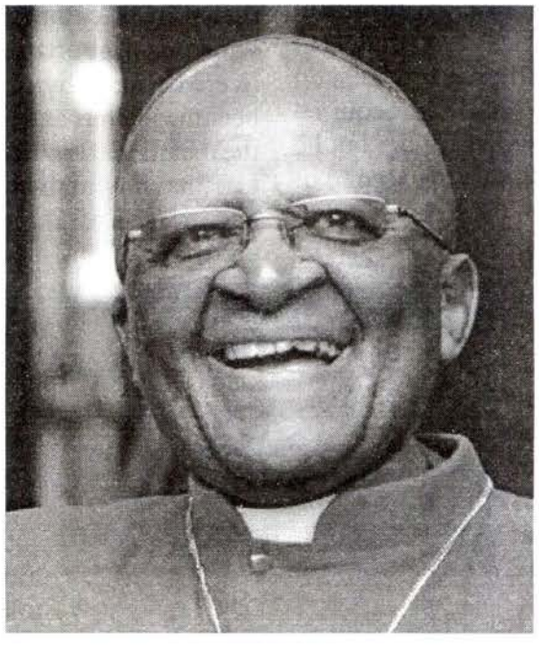

पर मनुश्य द्वारा बनाये रंगभेद ने सब कुछ नष्ट कर दिया है। कारण रंगभेद लोक सत्ता में है। वे जन्मजात अधिकार के रूप में इस का उपयोग करते हैं। वे भूल जाते हैं कि ईश्वर ने तो सब को मनुष्य बनाया, जातपात रंगभेद तो मनुष्य की सोच की उपज है। वे शायद नहीं जानते कि जब हम ईश्वर की संतानों के साथ बुरा व्यवहार करते हैं तो यह ईश निन्दा है।

अब मैं और बात की और ध्यान दिलाता हूं । असुरक्षा की भावना से ग्रस्त हो कर दुनिया का हर देश चाहे शक्तिशाली हो या कमजोर, हथियारों की होड़ में लगा है। विनाश के उपकरणों पर अरबों डालर खर्च किये जा रहें है जब कि लाखों लोग भूख से मर रहें है। रक्षा के बजट पर जितना खर्च किया जा रहा है अगर उसका एक छोटा सा हिस्सा भी ईश्वर की संतानो के पेट भरने, उन्हें शिक्षित करने पर खर्च किया जाये तो उन्हें खुशहाल जिन्दगी जीने का अवसर मिल जायेगा। हमें वंचित लोगों को जरूरत की चीजें उपलब्ध करवाने की क्षमता है पर हम तो उन्हें कतारों में लगे देखकर ही खुश हो जाते है।

आखिर कब दुनिया के लोग उठ कर खड़े होंगे और कहेंगे———बस बहुत हो चुका। ईश्वर ने हमारी रचना मिलजुल रहने के लिये की है, न कि एक दूसरे को खत्म करने के लिये। यदि खत्म करना ही उसका उदेश्य होता तो हमें धरती पर भेजता ही नहीं

आईये इस बात को समझें कि हम एक ही ईश्वर की संतान है। हमें प्रेम से रहने के लिये भेजा है। जब हम ईश्वर की संतानों के साथ बुरा व्यवहार करते हैं तो यह ईश निन्दा है।

जब हम डेसमंड टूटू की तरह सोचना प्रारम्भ कर देते हैं तो अध्यात्मिक बन जाते है। वेदों का ज्ञान दुनिया के हर कोने में है, बात सिर्फ मिथ्या अभिमान और अज्ञान के कवच से बाहर निकलने की है। ज्ञान की कोई खास भाषा या परिधी नहीं होती और न ही किसी खास वर्ग का इस पर अधिकार है। ईश्वर ने जब मनुष्य इतने बड़े संसार के हर कोने में बनाया है तो उसे जीवन यापन करने का ज्ञान भी दिया है।

जो डेसमंड टूटू ने दक्षिण अफ्रिका के बारे में कहा है उस से कहीं बुरी हालत हमारे देश में जाति प्रथा को ले कर है। स्वतन्त्रता के 70 वर्ष बाद भी हमारे देश के बहुत से ऐसे हिस्से है जहां अगर हमारे किसी स्कूल में शुद्र बच्चों का मिड डे खाना बनाता है तो उंची जाति वाले अपने बच्चों को खाना खाने से मना कर देते है। ईश्वर भक्ति ईश्वर के गुणों को धारण करना है और उस में एक है हर प्राणी को प्यार करना। उस समय हम डेसमंड टूटू की यह बात याद रखें कि ईश्वर की संतानो के साथ बुरा व्यवहार ईश निन्दा हैं । पाठ, हवन, जाप सब कोरा है अगर आप दसरे मनुष्य से इसी लिये घृणा करते हैं क्योंकि वह दूसरी जाति का है।

*****

IMPRESS OTHERS WITH YOUR GENEROSITY, COMPASSION KINDNESS ------- Not with money

Make money your slave and not master

Dr. Col (Retd) Bharat Indu Verma

1. A person known to me got about Rs. Four Crores as his share of family inheritance. Neither he had seen such kind of money, nor he would ever be able to make it, I am sure. It was just like hitting one big fat lottery. But as soon as he came to know of the 20% Capital Gains Tax on that Free Inheritance (amounting to Rs 80 lakh, leaving clean Rs 3.20 Crore tax paid capital with him), his first reaction was how to avoid or minimize paying tax. Gentleman was not happy with Rs 3.20 Crore Gift God or his Parents/grandparents had left for him but having to pay Rs. 80 lakh as tax to government, made him sullen and unhappy.

Mahasheg Dharam Pal
Donates millions for Ved Prachar

2. A friend was very unhappy and complained that auto driver on return from hotel we were staying, had charged Rs. 70 while another auto had charged Rs 50 while going. He kept cribbing about Rs 20 'overcharged' by the returning auto man. Same evening, when we went to the bar for drinks and dinner, he selected the costliest 'single malt' unhesitatingly (cost Rs 440 per 30ml.). He had eight 30 mls. With food and snacks, bill might have been about Rs 7000. I made no overtures to pay but he took out his card and paid the bill without a care.

There can be umpteen such examples, people searching their pockets for the smallest coin to give to the ill-fed beggar in rags who might not have eaten a square meal for days but offering hundreds or thousands in temple 'hundi' asking God to give them more or looking for a Rs. 10 note in their purse to tip the bell boy who brought his luggage to the room while staying in Rs 10,000 per night room in a star hotel. I often see lots of bargain going on when maid asks for a well deserved raise, making our lives so comfortable stress-free (See the panic in the household when she says she wants leave or is not able to come for some genuine reason).

Why is it so that with increasing incomes and salaries, we should become more Generous in GIVING or SHARING OUR MONEY AND RESOURCES with those not so lucky, but we are becoming more stingy and remain in 'accumulation mode' even at the ripe old age. We cling to the money as if we are going to live for ever. We deprive ourselves of the JOY OF GIVING, the SATISFACTION, UPBEAT FEELING HEALTH BENEFITS that we are so much better off than others, are in a position to GIVE not Get.

Have you ever thought how are we what we are? Mostly people think because of hard work, intelligence, use of opportunities which came etc. etc. NO Sir. NO. We are what we are because of the family or parents we were born to, which was not in our hands. 90% of our achievements in life are because of this least understood or accepted factor. And this was not in our hands. Its the God or Creator who did that. Sachin Tendulkar is a great cricketer because of the parents or family which

*****

gave birth to him with God given talent, family nurturing that talent and he putting in immense hard work to become what he is, a Cricket Great.

You GIVE for your Happiness Satisfaction. When YOU GIVE THE NEEDY, GOD NOTICES YOU ALSO GIVES YOU MORE. When you Give someone more than he expects, He also Gives you more than you Expect.The Best you can do to you or your Business is, to look after your employees and their families, their children's education and other small pleasures we indulge in as a matter of right. Then you see their enthusiasm, passion and hard work which takes business to Unlimited Heights. JUST TRY THAT.

When we Go on our eternal journey, we carry nothing with us. Everything is left here. When you leave a large inheritance for your sons and daughters, they want to enjoy the Money and Wealth you have left. So, they forget you soon Live On their Life. Giving Habit also adds to your Good Health Glow. So, Give More than they expect to Get More than what You Want from Him.

Hence, always consider yourself THE MASTER MONEY NOT SLAVE. NEVER TRY AND IMPRESS OTHERS WITH YOUR MONEY. IMPRESS OTHERS WITH YOUR GENEROSITY, COMPASSION KINDNESS.

*****

समपादकिय

अच्छा हो हम हिन्दुत्व के नाम पर चल रहे बर्बरता के विरूद्ध आवाज उठायें

अच्छा हो हम हिन्दुत्व के नाम इस बर्वता के विरूध बोलें बेरहम लोंगों की एक हिंसक भीड़ ने जुनैद नाम के एक मुसलमान बालक की हत्या कर दी, जब कि वह ईद त्योहार पर खरीद–दारी कर रेल गाड़ी के एक भीड़ वाले डिब्बे में वापिस आ रहा थ। न केवल जुनैद को को कुछ वहशियों ने मार डाला, बल्कि एक जन समुह खड़ा यह सब देखता रहा। मेरी राय में वह जनसमुह भी उतना ही हत्यारा है जितना कि वे वहशिये। यही नहीं उनको देश द्रोही कहा गया और गउ का मांस खाने वाला कह कर उनकी दाड़ी खींची गई और टोपी फैंक दी गई। हैरानगी कि बात तो यह है कि कुछ लोग इस हत्या को तर्कसंगत बता रहें है। पिछले दो तीन साल में मुसलमानों के विरूद्ध यह घटनायें आम हो गई हैं।

आप सोचिये कि त्योहार वाले दिन अगर हमारा बच्चा ऐसी घटना का शिकार हो तो हमारे पर क्या बीतेगी। अक्सर ऐसी घृणा का शिकार बेगुनाह होते हैं। यह एक सच्चाइ है कि मुसलमान इस देश का हिस्सा हैं, उनका जनसंख्या में 20 फी सदी हिस्सा है पानी कि 25 करोड़ हैं उन्हें आप देश से बाहर नहीं फैंक सकते। न हीं आप उनके खाने की आदत को बदल सकते है। आप अपने बच्चें की आदत को ही नहीं बदल सकते तो उनकी आदत को कैसे बदलेंगे। हिन्दुओं में 70 प्रतिशत मांस खाते है। क्या आप उन्हें मांस खाने से रोक सकते हैं। जो भी हिन्दु बाहर देशों में रहते हें उन में आधे से अधिक गउ मांस वाला बर्गर खाने से परहेज नहीं करते । मेरा अपना देखा अनुभव है। कया आप उन्हें अपने घर के अन्दर आने से रोक रहें हैं। नही तो मुसलमानों पर जबरदस्ती क्यों?

सहनशील, सत्य के मार्ग पर चलने वाला,
जिज्ञासु व्यक्ति ही योग मार्ग में आगे बढ़ सकता है।

Editorial

Situation really gloomy for the nation

In any democracy, when the opposition loses its spunk, things become worse than the autocratic rule. It is the opposition which checks the govt from assuming dictatorial powers. Somehow, today we are in a situation when opposition has become non existent.

Congress is saddled with wrong leadership and because of that it is faltering at every step otherwise there is no reason for it to throw its weight behind graft accused Tejashwi in Bihar. A family which has gathered properties worth thousands of crores in last three decades with the abuse of power and unknown and in-explainable sources has to be distanced and severely condemned, as Nitish has shown. But Congress chose to embrace him. Under the situation the Congress party can not hopeto get support of the right minded people which it needs badly for its revival and when it lends supports to likes of Lalu and Tejashwi, it has only disgrace in store. I do not agree with the people who say that Modi is using CBI to finish opposition. My question to them is ------why he has not used against Nitish and Naveen Patnaik. And if he as PM does not act against corrupt then who else will act.

Modi rule and NDA's victory in most of the elections that were held after 2014 gives only one lesson-----people value honesty at the top and they can forget their mistakes if leader is a man of integrity. Same applies to Haryana. Khattar otherwise has been listless.

Our opposition parties need to learn that time is over for likes of Mayawati, Maran, Lalu and co. who indulged in open loot. One may see a change in Tamil Nadu also. To check Modi you have to become Modi, otherwise field is open for Modi and he is going to survive even with mistakes.

Indeed situation is very gloomy for the country.

अगर चोरों और लुटेरों का महागठ बन्धन बन भी गया तो मोदी को कोई फर्क पड़ने वाला नहीं। यह तो उस के दिल का बात होगी काश कांग्रेस में कोई नेता होता जो कि पार्टी को राहुल और सोनिया के मानसिक दिवालियेपन से बचा सकता

*****

स्त्री, पुरुष - दोनों एक दूसरे के पूरक हैं, प्रतिद्वन्द्वी नहीं

कृष्ण चन्द्र गर्ग

आजकल स्त्री और पुरुष में समानता की वकालत की जा रही है। इसमें समानता की कम और प्रतिद्वन्द्विता की बू ज्यादा आती है। यह भावना परिवार में सौहार्द के लिए खतरनाक है। इससे पति–पत्नी में प्रेम की अपेक्षा द्वेष की भावना पनपती है जो परिवार के लिए सुखकारी नहीं है और बच्चों के विकास पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

बृहदारण्यक उपनिषद में ऋषि याज्ञवल्क्य कहते हैं, "स्त्री और पुरुष चने के आधे आधे दल की भान्ति हैं। जैसे दोनों दल मिलकर पूरा चना बनता है, ऐसे ही स्त्री और पुरुष दोनों मिलकर ही पूर्ण होते हैं।"

Benjamin Franklin, a great American Philosopher of 18th century, says, "Man and woman have each of them qualities and tempers in which the other is deficient, and which in union contribute to the common felicity. Single and seperate they are not the complete human beings : they are like the odd halves of scissors."

अर्थ – अठारहवीं सदी के महान अमरीकी दार्शनिक बैंजामिन फ्रैंकलिन कहते हैं, "पुरुष और स्त्री – प्रत्येक में वे गुण और स्वभाव हैं जो दूसरें में नहीं हैं और वे मिलकर दोनों एक दूसरे को प्रसन्नता और सुख देते हैं। वे दोनों अलग अलग पूर्ण मानव नहीं बनते, वे कैंची के दो अलग अलग फालों की तरह हैं।"

स्त्री और पुरुष दोनों के कार्य और जिम्मेदारियां अलग अलग हैं। स्त्री घर में गाय आदि पशुओं की देख–भाल करती है, बच्चों का पालन–पोषण करती है, पति की जरूरतों को पूरा करती है, सास, ससुर, देवरों और ननदों को उचित सम्मान देती हैं। घर की साफ–सफाई रखना, उत्तम स्वास्थ्य वर्धक भोजन तैयार करना, रोगी होने पर परिवार को औषधि देना, घर में आए अतिथियों का यथायोग्य सत्कार करना, घर के खर्च का हिसाब रखना – ये सभी काम स्त्री के अधीन रहते हैं।

पुरुष घर को चलाने के लिए तथा शुभ कार्यों में दान देने के लिए सात्विक तरीकों से धन कमाता है। पत्नी को, बच्चों को तथा परिवार के अन्य सभी सदस्यों को सुरक्षा प्रदान करता है। पुरुष बाहर से थका–मान्दा और परेशान आता है तो स्त्री मीठी और शान्ति देने वाली वाणी बोलकर उसे शान्त करती है। एक दूसरे को देखकर पति, पत्नी का चेहरा खिल उठता है।

अथर्ववेद का मन्त्र है –

इह इमौ इन्द्र सं नुद चक्रवाका इव दम्पती।
प्रजया एनौ सु अस्तकौ विश्वम् आयुः व्यश्नुताम्।।

अर्थ – पति, पत्नी दोनों मिलकर चकवा, चकवी की भान्ति प्रेमपूर्वक रहें। उत्तम घर वाले और उत्तम सन्तान वाले होकर सारी आयु आनन्द से व्यतीत करें।

मनुस्मृति में महर्षि मनु लिखते हैं –

सन्तुष्टो भार्यया भर्ता भर्त्रा भार्या तथैव च।
यस्मिन्नेव कुले नित्यं कल्याणं तत्र वै ध्रुवम्।।

अर्थ : जिस परिवार में पत्नी से प्रसन्न पति और पति से प्रसन्न पत्नी रहती है उस कुल में सदा निश्चित कल्याण होता है।

ये सारी बातें बताती हैं कि पति–पत्नी दोनों एक दूसरे के पूरक हैं, प्रतिद्वन्द्वी नहीं।

स्त्री सम्मान की बात भी जोर शोर से उठाई जा रही हैं। इस सम्बन्ध में ऋग्वेद का मन्त्र है –

सम्राज्ञी श्वसुरे भव सम्राज्ञी श्वश्रवा भव।
ननान्दरि सम्राज्ञी भव सम्राज्ञी अधि देवृषु।।

अर्थ – पति अपनी पत्नी से कहता है, हे स्त्री! तू अपने सास, ससुर, ननदों और देवरों सबके साथ प्रेम पूर्वक व्यवहार करके घर में रानी की तरह रह।

इसी सन्बन्ध में महर्षि मनु लिखते हैं –

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः।।

अर्थः जिस घर में स्त्रियों का सत्कार होता है उस घर में देवता वास करते हैं अर्थात उस घर में उत्तम भोज्य पदार्थ और उत्तम सन्तान होते हैं। और जिस घर में स्त्रियों का सम्मान नहीं होता वहां सब क्रिया निष्फल हो जाती है।

MOMENTS OF FUN
It is the perfect time to be a woman in India

Bhartendu Sood

YES, it is the perfect time to be a woman in India because, finally, she has got the world listening to what she is saying. A woman in our country was never as domineering as I see her now.

Case 1: Suspecting that her husband was cheating on her, a resident of Sangrur, Punjab, murdered him. If things had ended here, probably she would not have figured in this piece, but she displayed exceptional audacity of putting the body in the kitchen refrigerator and, who knows, she might have roasted it too if she had more time — nearly on a par with Sunil Sharma of the infamous Delhi tandoor case. Not to forget, the recent Mohali case where a woman stuffed the body of her 6foot plus and 100 Kgs plus husband in a suitcase after allegedly killing him.

Case 2: Our domestic help is a young woman with a small daughter. She was, it seemed, the sole bread-winner of her family, as her 'nikama' husband would idle his time at home. One day, spotting an opportunity, he slipped out of the house with her hard-earned savings. After a month or so, when he had exhausted the last penny, he decided to return, only to find the police looking for him. His wife had lodged a police complaint! With nobody to bail him out, he is cooling his heels in jail.

Case 3: A youth in our friend circle was justifiably in seventh heaven, having found a highly accomplished woman as his life partner. After the wedding celebrations in a five-star hotel, foreign jaunts and expensive shopping were regular features. His family did not mind financing these, in the hope that the daughter-in-law, after the completion of her professional degree, would fill the empty coffers. But to their discomfort, she had other plans. Almost two years after their marriage, she shocked everyone by declaring, 'I sense no compatibility with my husband and would like to seek a divorce.'

In a joint meeting before filing a petition for mutual divorce, the appointed mediator asked both parties to return expensive gifts they had given each other. The man's family took no time in returning what he had received, but after taking these in her possession, the woman's mother gently remarked, 'She won't return the gifts as these constitute 'istri dhan' which can't be taken back!'

I use city bus for local transportation. Two seats are reserved for senior citizens, but most of the times, young girls are seated there. The conductor finds himself as helpless as I do in such sticky situations.

You are getting me wrong if you think that I am upset with their advancement. I'm very happy to see Patriarchial India getting the taste of matriarchy. All that I want to suggest my male colegues is that they need to change not only their mindset but tone up their bodies too if the incident involving Rohtak sisters is any pointer. And mind you , this is not all, generally the women leaders are heard saying---'still more needs to be done' and I am simply taken over by a feeling of trepidation thinking — what that 'more' would be!

मनोरंजन के क्षण

क्यों कहती है हमारी महिलायें --- महिला सशक्तिकरण के बारे में और बहुत कुछ करने की आवश्यकता है। इन श्रीमान से सुन लें

मैं शहर के रोटरी कलब का प्रेसीडेंट हूं। रोटरी में प्रायः हर महीने एक विशिष्ट व्यक्ति को आमंत्रित किया जाता है। वक्ताओं की सूची तैयार करते समय आज के समय में आप महिला वक्ताओं को नजरअन्दाज नहीं कर सकते जब की बड़ी कम्पनियों में भी महिला डायरेक्टर बनाना आवश्यक हो गया है, मैं विशिष्ट महिला वक्ताओं के बारे में सोच ही रहा था कि सहसा ध्यान आया कि हमारे पास के कालेज की प्रधानाचार्य मिसेज वर्मा भी एक अच्छी वक्ता है, जिसका जिकर मेरी अपनी बेटी दो तीन बार कर चुकी थी। संयोगवश मिसेज वर्मा के पति हमारे महकमें के जहां मैं कार्यरत हूं हैड हैं। अगले दिन उचित समय देखकर मैं श्री वर्मा के पास गया और बता दिया कि रोटरी वाले मिसेज वर्मा का भाषण करवाने के इच्छुक हैं। श्री वर्मा के चेहरे पर एक खास प्रसन्नता को देखा जो पहले कम ही दृष्टिगोचर होती थी, उन्होने चाय पिलाकर और यह कह कर विदा किया कि मैं अपनी पत्नि से अवश्य कह दूंगा और मुझे विश्वास है कि वह इस के लिये समय अवश्य निकालेंगी।

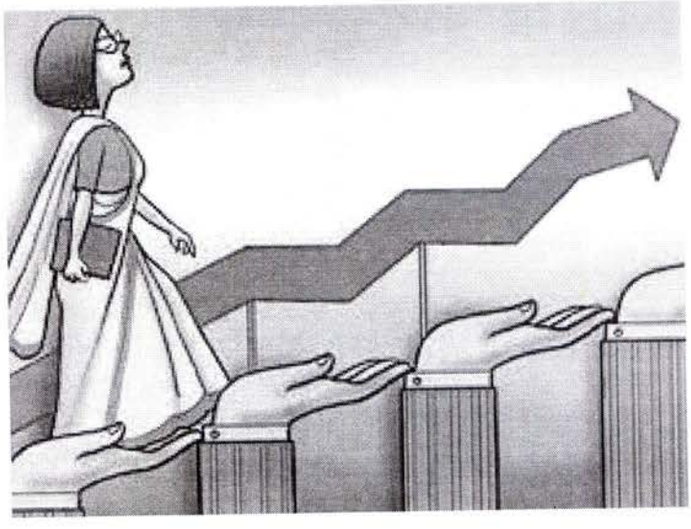

मैं भी अती प्रसन्न बास के कैबिन से बाहर निकला कयोंकि यह ऐसी बात थी जिससे मैं और बास दोनो खुश थे।

अगले दिन शाम को ओपचारिकता के तौर पर मैं मिसेज वर्मा को भेजे जाने वाले निमन्त्रण पत्र पर हस्ताक्षर करने वाला ही था कि मोवाईल की घटीं बजी----मैं मिसेज वर्मा, मि अग्रवाल से बात करना चाहती हूं।

मैडम मैं ही अग्रवाल हूं। आशा है आप को श्री वर्मा जी से सूचना मिल गई होगी और आप कुछ समय निकालने की कृपा करेगे।-----मैने जवाब दिया

समय निकाल पाना समस्या नहीं। पर समस्या है आप के निमन्त्राण का तरीका। मिसेज वर्मा के हाव भाव से स्पष्ट था कि वे कुछ अप्रसन्न है। मैं कुछ आश्चर्य में था और बहुत विनम्र भाव से बोला-----मैडम मैं कुछ समझ नहीं सका।

आप मुझे जानते हैं न? भली भंति आप मेरा फोन नम्बर भी जानते है।।

हां मैडम----मैने उतर दिया।

जब भाशण मुझे देना है, समय मुझे निकालना है तो फिर पति को माध्यम बनाने का क्या मतलव? हम पति पत्नि अवश्य है, पर पत्नि से हट कर मेरा अपना एक व्यक्तित्व है, एक अलग पहचान है और मैं चाहती हूं कि मेरे उस व्यक्तित्व को पहचान दी जाये। अगर मेरी पहचान मेरे पति से ही है तो फिर भाषण भी उन्ही से क्यों नहीं करवा लेते?

मैने सारी कह कर झट से माफी मांगी। मुझ जैसे मूर्ख को यह दो बातें पता लग चुकी थी कि हमारी महिला नेता क्यों यह कहती है कि-----महिला सशक्तिकरण के बारे में और बहुत कुछ करने की आवश्यकता है। दूसरा वर्मा जी अक्सर क्यों देर शाम तक दफतर में ही रहते है।

श्री कृष्ण चन्द्र गर्ग ने सही कहा हैं कि---- आजकल स्त्री और पुरुष में समानता की वकालत की जा रही है। इसमें समानता की कम और प्रतिद्वन्द्विता की बू ज्यादा आती है। यह भावना परिवार में सौहार्द के लिए खतरनाक है।

Fasting - The Master Remedy

Fasting refers to complete abstinence from food for a short or long period for a specific purpose. The word is derived from the old English, 'feastan' which means to fast, observe, be strict.

Fasting is nature's oldest, most effective and yet least expensive method of treating disease. It is recognized as the cornerstone of natural healing. Dr. Arnold Eheret, the originator of the muscusless diet healing system, describes it as "nature's only universal and omnipotent remedy of healing" and "nature's only fundamental law of all healing and curing. "

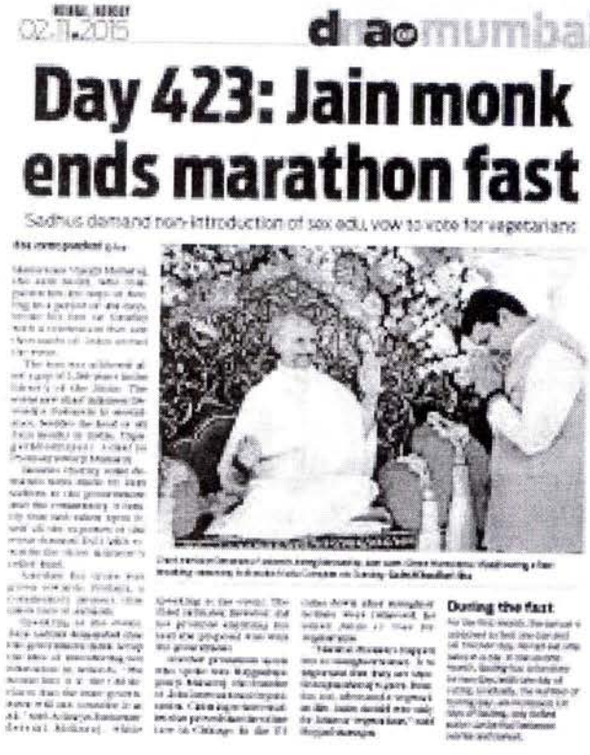
02.11.2015

dnaomumbai

Day 423: Jain monk ends marathon fast

Sadhus demand non-introduction of sex edu, vow to vote for vegetarians

The practice of fasting is one of the most ancient customs. It is followed in almost every religion.

The Mohammedan, the Buddhists, the Hindus and many others have their periods of strict fasting. The saints of medieval times laid great stress on this method.Fasting in disease was advocated by the school of natural philosopher, Asclepiades, more than two thousand years ago. Throughout medical history, it has been regarded as one of the most dependable curative methods. Hippocrates, Galen, Paracelsus and many other great authorities on medicine prescribed it. Many noted modern physicians have successfully employed this system of healing in the treatment of numerous diseases.

The common cause of all diseases is the accumulation of waste and poisonous matter in the body which results from overeating. The majority of persons eat too much and follow sedentary occupations which do not permit sufficient and proper exercise for utilisation of this large quantity of food. This surplus overburdens the digestive and assimulative organs and clogs up the system with impurities or poisons. Digestion and elimination become slow and the functional activity of the whole system gets deranged. The onset of disease is merely the process of ridding the system of these impurities. Every disease can be healed by only one remedy - by doing just the opposite of what causes it, that is, by reducing the food intake or fasting. By depriving the body of food for a time ,the organs of elimination such as the bowels, kidneys, skin and lungs are given opportunity to expel, unhampered, the overload of accumulated waste from the system. Thus, fasting is merely the process of purification and an effective and quick method of cure. It assists nature in her continuous effort to expel foreign matter and disease producing waste from the body, thereby correcting the faults of improper diet and wrong living. It also leads to regeneration of the blood as well as the repair and regeneration of the various tissues of the body.

Duration

The duration of the fast depends upon the age of the patient, the nature of the disease and the

amount and type of drugs previously used. The duration is important, because long periods of fasting can be dangerous if undertaken without competent professional guidance. It is, therefore, advisable to undertake a series of short fasts of two to three days and gradually increase the duration of each succeeding fast by a day or so. The period, however, should not exceed a week of total fasting at a time. This will enable the chronically sick body to gradually and slowly eliminate toxic waste matter without seriously affecting the natural functioning of the body.

A correct mode of living and a balanced diet after the fast will restore vigour and vitality to the individual.Fasting is highly beneficial in practically all kinds of stomach and intestinal disorders and in serious conditions of the kidneys and liver. It is a miracle cure for eczema and other skin diseases and offers the only hope of permanent cure in many cases. The various nervous disorders also respond favourably to this mode of treatment.

Fasting should, however, not be restored to in every illness. In cases of diabetes, advanced stages of tuberculosis, and extreme cases of neurasthenia, long fasts will be harmful. In most cases, however , no harm will accrue to fasting patients, provided they take rest, and are under proper professional care.

Methods

The best, safest and most effective method of fasting is juice fasting. Although the old classic form of fasting was a pure water fast, most ofthe leading authorities on fasting today agree that juice fasting is far superior to a water fast. During fasting the body burns up and excretes huge amounts of accumulated wastes. We can help this cleansing process by drinking alkaline juice instead of water. While fasting ... elimination of uric acid and other inorganic acids will be accelerated. Thus sugars in juices strengthens the heart ... juice fasting is, therefore, the best form of fasting. "Vitamins, minerals, enzymes and trace elements in fresh, raw vegetable and fruit juices are extremely beneficial in normalising all the body processes. They supply essential elements for the body's own healing activity and cell renegeration and thus speeding the recovery. All juices should be prepared from fresh fruit immediately before drinking. Canned or frozen juices should not be used.

A precautionary measure which must be observed in all cases of fasting is the complete emptying of the bowels at the beginning of the fast by enema so that the patient is not bothered by gas or decomposing matter formed from the excrements remaining in the body. Enemas should be administered at least every alternate day during the fasting period. The patient should get as much fresh air as possible and should drink plain lukewarm water when thirsty. Fresh juices may be diluted with pure water. The total liquid intake should be approximately six to eight glasses.

A lot of energy is spent during the fast in the process of eliminating accumulated poisons and toxic waste materials. It is, therefore, of utmost importance that the patients get as much physical rest and mental relaxation as possible during the fast. In cases of fasts in which fruit

juices are taken, especially when fresh grapes, oranges or grapefruit are used exclusively, the toxic wastes enter the blood -stream rapidly, resulting in an overload of toxic matter, which affects normal bodily functions. This often results in dizzy spells, followed by diarrhoea and vomiting. If this physical reaction persists, it is advisable to discontinue the fast and take cooked vegetables containing adequate roughage such as spinach and beets until the body functioning returns to normal.

The overweight person finds it much easier to go without food. Loss of weight causes no fear and the patient's attitude makes fasting almost a pleasure. The first day's hunger pangs are perhaps the most difficult to bear. The craving for food will,

however, gradually decrease as the

fast progresses. Seriously sick persons have no desire for food and fasting comes naturally to them. The simple rule is to stop eating until the appetite returns or until one feels completely well.

Only very simple exercises like short walks may be undertaken during the fast. A warm water or neutral bath may be taken during the period. Cold baths are not advisable. Sun and air baths should be taken daily. Fasting sometimes produces a state of sleeplessness which can be

overcome by a warm tub bath, hot water bottles at the feet and by drinking one or two glasses of hot water.

Benefits

There are several benefit of fasting. During a long fast, the body feeds upon its reserves. Being deprived of needed nutrients, particularly of protein and fats, it will burn and digest its own tissues by the process of autolysis or self-digestion. But it will not do so indiscriminately. The

body will first decompose and burn those cells and tissues which are diseased, damaged, aged system and the brain are not damaged or digested in fasting. Here lies the secret of the effectiveness of fasting as a curative and rejuvenative method. During fasting, the building of new and healthy cells are speeded up by the amino acids released from the diseased cells. The capacity of the eliminative organs, that is, lungs, liver, kidneys and the skin is greatly increased as they are relieved of the

usual burden of digesting food and eliminating the resultant wastes. They are, therefore, able to quickly expel old accumulated wastes and toxins.

Fasting affords a physiological rest to the digestive, assimilative and protective organs. As a result, the digestion of food and the utilisation of nutrients is greatly improved after fasting. The fast also exerts a normalising, stablising and rejuvenating effect on all the vital physiological, nervous and mental functions.

Breaking of Fast

The success of the fast depends largely on how it is broken. This is the most significant phase.

The main rules for breaking the fast are : do not overeat, eat slowly and chew your food thoroughly ; and take several days for the gradual change to the normal diet. If the transition to eating solid foods is carefully planned, there will be no discomfort or damage. The patient should also continue to take rest during the transition period. The right food after after a fast is as important and decisive for proper results as the fast itself.

*****

जो मृत्यु को सदैव ध्यान में रखता है, वह तेजी से सोचता है, तेजी से कार्य करता है, फलतः लक्ष्य की और तेजी से अग्रसर होता है व शीघ्र मन्जिल को पाता है।

*****

मन को कामादि विकार न आने देने का एक उपाय यह भी है कि स्वयं को हमेशा उतम कार्यों में व्यस्त रखना, महान लक्ष्य बनाकर उस की पूर्ति के लिये प्रयत्नशील रहना।

आपको अलग रहने का अधिकार है पर कहीं आप बच्चों के जीवन के साथ तो नहीं खेल रहे?

पिछले 30 वर्षो में हिन्दुस्तान की संस्कृति में जो एक नई बात जुड़ गई है वह है पति पत्नि का शादी के कुछ समय बाद अलग हो जाना या यूं कहे तलाक दे देना। यह अधिकतर उन्ही जोड़ों

में अधिक देखने को मिल रहा है जो कि पढ़े लिखे हैं और प्यार बन्धन के उपरान्त शादी कर रहें हैं। या यूं कहें कि यह प्रथा पढ़े लिखे वर्ग के साथ अधिक जुड़ी हुई है।

यह दो बातों का सूचक मानी जा रही है। पहला, स्त्री पति के नजायज दब दबे को सहन नहीं करेगी जैसा कि भारत में चलता रहा । उसे भी सम्मान के साथ अपनी शर्तो पर जीने का हक है। दूसरा आज जब की स्त्री भी पति की तरह ही पढ़ लिख कर कमा रही है तो उसे भी अपना कैरियर बनाने का वही हक है जो पति को है और इस मामले में आगे बढ़ने के लिये यदि सम्बन्धों को तोड़ना भी पढ़ता है तो कोई बात नहीं। यह तो पहली स्थिती है जब कि पति पत्नि विवाह के बन्धन से ही अलग हो गये।

दूसरी स्थिती वह है जब कि कागजों पर तो पति पत्नि हैं पर अलग रहतें हैं। इस में अधिकतर अपने व्यवसाय के लिये ऐसा कर रहें है। अधिकतर ऐसा महसूस करते हैं कि एक व्यक्ति की आय के साथ आज के खर्चे पूरे नहीं होते तो पत्नि को भी नौकरी व्यवसाय करना पढ़ता है। पर फिर भी बहुत से ऐसे हैं जिन में परिवारिक आय ही अलग रहने का कारण नहीं है, जब पत्नि भी पति के सम्मान या कई बार उस से अधिक पढि लिखी है और व्यवसाईक शिक्षा प्राप्त की है तो वह भी अपना कैरियर बनाना चाहती है और उस के लिये अलग रहने पर भी परहेज नहीं करती। उदाहरण के लिये लड़की ने डाक्टरी कर ली उस के बाद वह नौकरी पेशा न करे तो बात नहीं जमती। पर इन सब की ऐक सीमा है । लाईन कहां खींचनी हैं वह बहुत से पहलुओं पर निर्भर करता है।

यदि परिवार में पति पत्नि ही हो तो शायद इस तरह अलग होने का, या अलग रहने का इतना फर्क न पड़े। क्योंकि अलग रहते हुये भी बहुत से साथी की कमी को शारिरिक या फिर भावनातमक दृष्टि से कही न कहीं पूरा कर लेते ह। पर इसका सब से अधिक खामजियाना जिस को भुगतना पड़ता है वे हैं बच्चे और कुछ हद तक घर के बजुर्ग।

अमन एक अभियुक्त है। जो कि एक बड़े अपराध के लिये सजा भोग रहा है। वह एक मध्यम आय वर्ग वाले परिवार में ही पला और बड़ा हुआ। यही नहीं वह 12 वीं कक्षा तक अच्छे विद्यार्थीयों में था । पुलिस तहिकात कर के इस निष्कर्ष पर पहुची है कि उसके अपराधी बनने के पीछे सब से बड़ा कारण है कि जब वह 8 साल का था तो उसके माता पिता अलग हो गये थे। अमेरिका में किये गये र्सवेक्षण से मालुम हुआ है कि जिन बच्चों के माता पिता किसी भी कारण अलग हो जातें हैं उन में अपराध करने की क्षमता दूसरों के अपेक्षा तीन गुणा होती है। जिन पति पत्नि के बच्चे भी होते हैं और अलग होना चाहते है, उन्हें इस बात पर त्वजो देना बहुत आवश्यक है। किसी बड़े सुख के लिये छाटे निजी सुख का त्याग करने में ही बुद्विमता होती है। पर ऐसा होता नजर नहीं आता, कारण न केवल पति पत्नि बल्कि बड़े बजुर्ग भी एक दूसरे के प्रति इतनी घृणा लेकर बैठे होते है कि बुद्धि पर परदा छा गया होता है। अंहकार , क्रोद्ध, निजी स्वार्थ, ठीक सोचने ही नहीं देते। मासूम बच्चों पर बिना किसी कारण के पहाड़ टूट पडता है। उस बच्चे की क्या हालत होगी जिसे या तो मां मिल सकती है या फिर पिता। दोनों के जीवित रहते हुये भी उसे एक के पास ही रहना है।

बहुत बार ऐसी हालत में बच्चा मन ही मन घुटता रहता है और जब मां के स्थान पर मां या फिर पिता के होते हुये पिता नहीं मिलते तो वह कोई गलत रास्ते पर चला जाता है।

आज सब से दुख और चिन्ता वाली बात यह है कि हमारा मिडिया तलाक को जीवन का एक आवश्यक अंग बना कर पेश कर रहा है। जैसे कि यह सतारवां संस्कार हो, जिसके बिना जीवन अधुरा है। जो आंकड़े सामने आ रहें हैं वह हैरान करने वाले हैं। अकेले केरल में 48000 तलाक की अर्जीया कोर्ट के सामने हैं। बाकी राज्यों में भी स्थिति लगभग यही हैं। जिन राज्यों में शिक्षा का अनुपात जितना अधिक है, उतने ही अधिक तलाक के केस सामने आ रहें हैं। यह भी सत्य है कि हमारे देश में हालात उतने खराब नहीं जितने कि अमेरिका में हैं। वहां सौ में से 50 शादियां टूट रही है।

भारतीय माता पिता बच्चों से बहुत प्यार करते हैं और उस प्यार में बड़े से बड़ा त्याग करने में भी पीछे नहीं हटते। अगर यही प्यार व त्याग की भावना, वे उस समय जाहिर करें जब की उनका विवाहिक जीवन एक भयानक मोड़ पर आ जाता है तो बहुत सी शादियां टूटने से बच्चे सकती है और बहुत से मासूम बच्चे अपराधी होने से बच सकते हैं। दूसरा हमारे नवयुवक और नवयुवतियाँ को को यह समझना होगा कि

बालीबुड या टैलीविजन पर काम करने वालों के जीवन और हमारे जीवन में बहुत फर्क है। वहां शादी भी किसी मकसद से की जाती है और मकसद पूरा होने पर किसी दूसरे बड़े मकसद के लिये तोड़ दी जाती है। पर आम आदमी के लिये तो शादी जीवन भर का साथ है जो कि इस छोटी सी कहानी द्वारा बताई जा सकती है। एक बृद्ध पति की पत्नि यादाश्त खो चुकी थी, उसे यह भी मालुम नहीं रहा था कि जिस के साथ वह रह रही थी वह उसका पति था। एक दिन वह व्यक्ति अपने नाई के पास बाल कटवानें गया तो नाई बोला कुछ इंतजार करना पड़ेगा। वह बृद्ध नाई से बोला ——तुम तो जानते हो मेरी पत्नि अकेली है, मैं उसे इस हालत में अकेला नहीं छोड़ना चाहता। नाई को उस के परिवार के बारे में सब पता था। वह झट से बोला——उसे कोन सा पता है कि आप उसके पति हो। वह बृद्ध झट से बोला——मुझे तो पता है कि वह मेरी पत्नि है।

साथ निभाने के लिये बहुत सहन करना पड़ता है। यदि यह सहनशीलता आ जाये तो शयद यह रिश्ते यूं न टूटे।

आज हमारे समाज और देश की जो हालत बन गई है उसे देखते हुये तो ई,वर से यही प्रार्थना करना ठीक होगा

हे ईश्वर मुझे विनम्रता, सहनशीलता, धैर्य और संतोष दें।

*****

Divorce is anyday better than leading an adulterous marriage

POOJA BEDI

Married people cheating on their spouses is not a new phenomenon. However, seeing the dramatic increase in cases one wonders what's lacking and going so wrong within the "sacred" institution of marriage. Adultery is frowned upon by families, by society, and even by religion. Yet people throw caution, morality and fear of God to the winds and pursue, sometimes with reckless abandon, love and lust outside of marriage.

We need to re assess what marriage means, it's role, requirements and legalities and what value it brings in todays modern era. Pre-marital sex was taboo so at one point marriage was necessary if you wanted sex. Women traditionally stayed at home and played the role of nurturer, while the man was the provider. It was necessary for children but today single people are simply adopting kids or having kids out of wedlock.

With taboos lifted off pre-marital sex and women seeking money and job satisfaction outside the home, the reasons for getting married have dwindled. It is being perceived more of a prison and less of fairy tale. Unmarried couples are losing faith in old world fantasies of "marry and live happily ever after" reason, divorce involves arduous fights, involving tough laws and the spouse threatening to take the shirt off your back before they go". So people just choose to stay "stuck" in loveless, sexless marriages and feel justified playing the field to satisfy their desires for intimacy and caring.

Children being a key reason for getting married and also for not getting divorced has additionally shaped a growing adulterous population. "For the sake of the children", financially dependent women don't have the courage to leave their philandering husbands, live in emotional pain, or have their own indiscretions. One may mockingly say that an adulterous man is having the best of both worlds, it can't be a good feeling for him either to be sneaking around in fear of being caught, and seeing pain, suspicion and sadness is his wife's eyes every time there is a whiff of it.

The institution of marriage needs to change its prison like ambience and court processes need to be swift and effective. We need to reinvent the institution of marriage so it's not viewed as obsolete and a trap. People should be able to gracefully exit what's not working and we shouldn't empower adultery to become acceptable escapism.

Curx is that divorce is anyday better than leading an adulterous life but not to undermine the importance of haapy married life.

*****

पुस्तक

(English book of short stories)

सम्पादक व उनकी पत्नी नीला सूद ने अपनी लिखी व विभिन्न अंग्रेजी समाचार पत्रों में छपी 70 कहानियों का संग्रह एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया है जिसका नाम है Our musings। इसकी कीमत 150 रूपये है।

जो भी इसे लेने के इच्छुक हों वह मात्र 100 रूप्या भेज कर या हमारे किसी भी बैंक ऐकांउट(Bank Account) में पैसे डाल कर मंगवा सकते है। भेजने का खर्चा हमारा होगा। Account Nos वही हैं जो वैदिक थोटस पत्रिका के लिये है।

मंगवाने से पहले निम्न बातों का कृपया ख्याल रखें

पुस्तक अंग्रेजी भाषा में है। **Book is in English**

कहानियां धार्मिक नहीं परन्तु जीवन के विभिन्न पहलुओं से जुड़ी है। **Stories are on various aspects of human life.**

नीला सूद, भारतेन्दु सूद

0172–2662870, 9217970381

प्रकाश औषधालय

थोक व परचून विक्रेता

हमदर्द, डबार,

वैद्यनाथ, गुरूकुल, कांगड़ी,

कामधेनु जल व अन्य

आर्युवैदिक व युनानी दवाईयाँ

Wholesaler & Retailer of :

HAMDARD, DABUR, BAIDHYANATH,

GURUKUL KANGRI, KAMDHENU JAL

& All kinds of Ayurvedic & Unani Medicines

Booth No. 65, Sec. 20-D, Chandigarh

Tel.: 0172-2708497

M/S AMMONIA SUPPLY COMPANY

(An ISO 9001-2008 Certified Company)

Joins " VEDIC THOUGHTS" in its noble Pursuit of spreading 'Moral Values

WHAT A PRAYER BY A SENIOR CITIZEN !

Blessed are those;

Who look at me with kindness.

Who keep pace with me.

Who consider my fading ears.

Who behold my trembling ways.

Who recall fond memories of yester years.

Who patiently bear with all repeats.

Who sing and dance to my varied tunes.

Who ignore my casual whims and fancies.

Who accompany me in my loneliness.

Who lighten my burdens each day.

Who cheer me up with smile, song and laughter.

Who are near me as I reach heaven's door.

SUPPLIERS OF ANHYDROUS AMMONIA AND LIQUOR AMMONIA

D-4 Industrial Focal Point, Derabassi, District (Mohali) Punjab

Contact:- Rakesh Bhargav, Branch Manager 093161-34239, 01762-652465

Fax 01762-282894. Email- asco.db@ascoindia.com & ascodb@gmail.com

संगठन--ईश्वर आसमान से नहीं गिरातां

श्री राकेश पंडित द्वारा सुनाई बात पर अधारित

एक आर्य समाजी प्रवक्ता किसी शहर में उत्सव में उपदेश देने के लिये आये हुये थे । उसी शहर में उनका एक पुराना मित्र भी रहता था। सोचा उस को मिल आते हैं, उसके घर पहुंचने पर मालुम हुआ कि वे घर पर नहीं थे, पूछने पर मित्र की पत्नी ने बताया कि वे तो निरंकारी सत्संग में गये हुये है। पूछा सत्संग कितने समय तक चलेगा । पत्नि ने कहा कि तीन चार घंटे तो लग जायेंगे। आर्यसमाजी सज्जन बोले कोई बात नहीं मैं यहा आप के पासं बैठ कर उनका इंतजार कर लेता हू। पत्नि बोली ---भाई साहब, मैं खुद भी बेटा बेटी के साथ सत्संग के लिये निकल ही रहीं हूं और चाहुंगी कि आप भी मेरे साथ चलकर इस मौके का फायदा उठायें। वे आर्य समाजी सज्जन इंकार न कर सके और उनके साथ सत्संग के लिये निकल गये। वहां जा कर देखा तो सैंकड़ो लोग बहुत श्रद्धा के साथ सत्संग का आन्नद उठा रहे थे। बैठे बैठे सोचने लगे-----हमारे यहां ऐसे मौकों पर 30--40 व्यक्ति इकठठे करने के लिये ऐड़ी चौटी एक करनी पड़ती है। और यहां सैंकड़ो। सोचा तो इस निश्कर्ष पर पहुंचे कि जैसे यह लोग एक दूसरे को प्यार से संगठित करते हैं, वैसे हम नहीं करते। मैं भी यहां तभी आया जब उस स्त्री ने इतने आदर भाव से मुझे चलने को कहा। कोई बात नही हम भी ऐसा ही किया करेंगे।

अपने शहर पहुंचे तो जैसे ही ऐतवार आया और सत्संग के लिये निकलने लगे तो अपने पड़ोसी मुदड़ा जी के घर पहुंचे और बोले-----आईये मूंदड़ा जी आपको आर्य समाज के सत्संग में ले चलता हूं। एक बार मेरे कहने पर चल कर तो देखो, बहुत दूर से हमने वेदों के विद्वान बुलायें हुयें है।। मूदंड़ा जी बोले-----कोई बात नहीं आप कहते हैं तो अवश्य चलुंगा पर यह बताईये भाभी जी कहां है। ऐसा था उनकी बहन आने वाली है तो वह खाना बनाने में लगी है। मूंदड़ा जी ने सुना तो बोले ----और बच्चे? वे तो अपनी कोचिंग के लिये गये है। मूंदड़ा जी मुसकराये और उन आर्य समाजी सज्जन को देखते हुये बोले ----भाई साहब माफी चाहता हूं, बिना काम के तो मैं भी नहीं हूं।

कहने का अर्थ यह है कि संगठन आर्य समाज में संगठन सूत्र का पाठ करने से नहीं बनता। संकल्प के बिना तो यह मीरासी और भाट की तरह बार बार दोहराने वाली बात है। संघटन तो आपके अपने घर से आरम्भ होता है और आपके अपने संकल्प और त्याग से बनता है। ईश्वर ने संस्कृत में आपका पाठ सुनकर संगठन आसमान से तो फैंक नहीं देना जो हम हर ऐतवार को शांति पाठ से पहले औपचारिकता के तौर पर 10--12 ऐकत्रित आर्य समाजी संगठन सूत्र बोलकर यह सोच लेते हैं कि काम हो गया। यह सत्य है कि संगठन उसी तरह बनते हैं जैसा कि उस आर्य समाजी सज्जन ने अपने निरंकारी मित्र परिवार के घर में देखा।

कभी ऐसा ही जजवा आर्य समाज परिवारों में भी होता था। इसी लिये आर्य समाज एक बहुत बड़ा संघटन उभर कर सामने आया। मुझे अपना बचपन याद आता है------बात 1950--60 की है। हम संजौली शिमला में रहते थे। वहां का आर्य समाज लोअर बाजार में था जो कि संजौली जहां हम रहते थे वहां से लगभग तीन किलो मीटर था। पहाड़ी इलाका था, पैदल चलकर ही एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाया जाता था। आज कि तरह कार या लोकल बसों की सुविधा नहीं थी। वहां आर्य समाज 10 बजे लगती थी। हमारा सारा परिवार माता पिता चार भाई बहन

सुवह नाश्ता कर के 9 बजे निकल जाते और दौपहर का खाना पैक कर लेते। 12.30 या एक बजे आर्य समाज खत्म होता तो वही बैठ कर खाना खाते और वापिस आते। जाते हुये और आते हुये रास्ते भर बाते करते। यह होता था आर्य समाज के लिये जजवा।

क्या आपको ऐसा ही जजवा आज नजर आता है? अगर नही तो यह संगठन सूत्र का जाप फजूल है। संघटन के लिये दूसरी आवश्यकता है कि हम अपने आप को बहुत ज्ञानी ध्यानी न मानकर दूसरों की बात को भी सुने और उसका आदर करें। जब तक दूसरों के विचारों के प्रति सहनशीलता, आदर नहीं, सेवा और त्याग की भावना नहीं, हमारे व्यवहार में विनम्रता नहीं, तो संघठन नहीं बन सकते। जहां यही कोशिश हो कि मैं ही बोलू और दूसरे को मौका न मिले वहां संघठन बन ही नही सकता। एक बार मैं सफर के दौरान ग्वालियर रेलवे स्टशन में आगे की गाड़ी का इंतजार कर रहा था, पता लगा गाड़ी 4 घंटे लेट है, ऐतवार का दिन था। सोचा यहां की आर्य समाज में जा आता हूं। कुछ ही देर में लक्सर स्थित वहां की आर्य समाज में पहुंच गया। सत्संग हो रहा था। वहां पर मैं नया था, इस लिये वहां उपस्थित व्यक्तियों का ध्यान स्वभाविक रूप से मेंरी और गया। तभी उन में से एक व्यक्ति मेरे पास आया और बोला——आप आगे आयें, अपना परिचय भी दें और 15 मिंट के लिये विचार रखें उस के बाद हमारे प्रधान अभिमन्यु खुल्लर जी का व्यक्तव्य होगा। मैं इंकार न कर सका और जो मेरी समझ में आया बोल दिया और उनका धन्यवाद कर के अपनी जगह पर बैठ गया। फिर उन सज्जन का भाषण हुआ जिनको बोलना था। शांती पाठ हुआ। मैं चलने लगा तो सोचा जाने से पहले मंत्री जी को मिल लेता हूं। दफ्तर पहुंचा तो भंयकर तूं तूं मैं मैं चल रही थी। बाहर ही खड़ा हो कर स्थिती शांत होने का इन्तजार करने लगा। कुछ ही समय में पता चल गया कि अभिमन्यु खुल्लर जी जो वहां के प्रधान थे मंत्री से इस बात पर लड़ रहे थे कि जब उनका भाषण था तो मझे बीच में खड़ा करने की क्या आवश्यकता थी। मेरी गाड़ी का समय हो रहा था, बिना मिले ही प्रस्थान करना उचित समझाा। तो यह है हम आर्य समाजियों का संघटन सूत्र और शांति पाठ। अभिमन्यु खुल्ल्र जी के लेख अक्सर आर्य जगत में पढ़ता रहता हूं। वेदों के विद्वान हैं। बहुत ज्ञान की बातें करतें है।

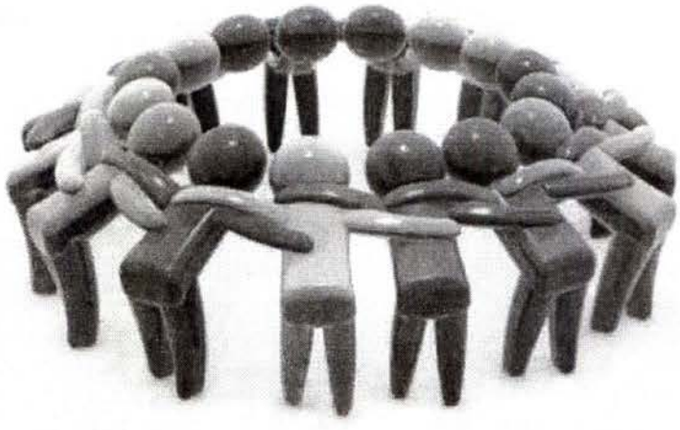

कई बार सोचता हूं कि हम आर्य समाजियों में अगर ज्ञान कम होता तो शायद इस समाज का बेढा पार हो जाता। कारण इस ज्ञान के कारण हम दूसरों को मूर्ख समझतें हैं, विनम्रता और सेवा की भावना कोसों दूर हो गई है।

*****

संसार में अनेक प्रकार की विचित्र घटनायें घटती ही रहती हैं,
पर योगाभ्यासी यह देखता ही रहता है कि उनका उस पर क्या प्रभाव हो रहा है।
जो उसे लक्ष्य से दूर करें उन को मन से दूर कर देता है।

How reading of 'Satyarth Prakash' changed baba Ram Dev's life

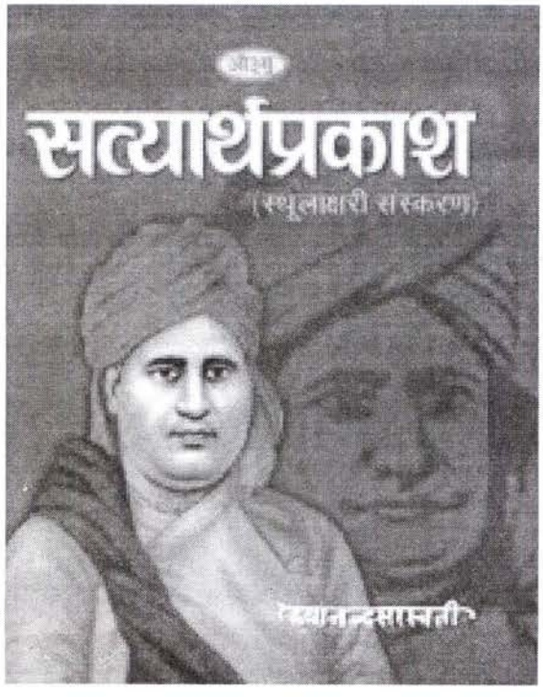

Baba Ramdev wasn't born in a family of saints, neither was he enrolled in gurukul by his parents. Just like most other parents in India, Baba Ramdev's parents enrolled him in a school where he was getting a regular education. He studied in the government primary school of his village till class V and moved to Shahbajpur High School for higher classes. He always bought second-hand books, but still managed to top his class.

Then what happened all of a sudden that inspired Ramdev to quit school, flee from home and enroll himself in a traditional gurukul?

A recently published book 'The Baba Ramdev Phenomenon: From Moksha to Market' written by Kaushik Deka throws light on all aspects of the life of this renowned personality.

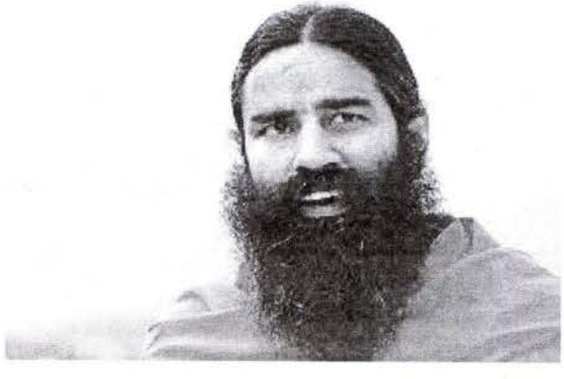

According to the book, reading 'Satyarth Prakash', a book written by the founder of Arya Samaj, Swami Dayanand Saraswati, transformed the life of Baba Ramdev. The book, which explains the true tenets of Hinduism, had a great impact on his life and is responsible for giving it a purpose. In the book by Kaushik Deka, Baba Ramdev is quoted as saying,

This book was a revelation to me. It awakened my inner-self, gave me a sense of purpose in life. It introduced me to the wisdom of our ancestors. I wanted to follow the path shown by the ancient sages. Dayanandji made me realise the value of the treasure trove hidden in Vedic education. It's a progressive approach based on 'tark' (logic), 'tathya' (facts), 'yukti' (argument) and 'praman' (evidence). The goal of British education system was to enslave our mind and curb free and logical thinking.

The book 'The Baba Ramdev Phenomenon: From Moksha to Market' offers a deep insight into Ramdev's journey from attaining Moksha in the Himalayas to ruling the market with Patanjali products. It talks about the factors that led to the success of Patanjali and the vision of Baba Ramdev and his associate, Acharya Balkrishna.

*****

रजि. नं. : 4262/12 ।। ओ३म् ।। फोन : 94170-44481, 95010-84671

महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय -1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगढ़ - 160059
शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली
आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला
E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

NGO KOSHISH WITH THE AASHRAM CHILDREN

धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह
धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह
धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह
धार्मिक सखा 500 प्रति माह
धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह
धार्मिक साथी 50 प्रति माह

A/c No. : 32434144307
Bank : SBI
IFSC Code : SBIN0001828

आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते है :-

मधुकर कौड़ा लेखराम (+91 7589219746)

स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

स्वर्गीय
डॉ0 भूपेन्दर नाथ गुप्त
सूद

निमार्ण के 63 वर्ष

गैस ऐसीडिटी
शिमला का मशहूर
कामधेनु जल

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई
मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489, Yamunanagar-232063, Dehradoon-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwaliyar-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajiabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jallandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552, Patiala-2360925, Bhatinda-2255790

Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.
शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45-ए चण्डीगढ 160047
0172-2662870, 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

जिन महानुभावो ने बाल आश्रम के लिए दान दिया

JAI KRISHAN SHARMA

PRATIMA KHURANA

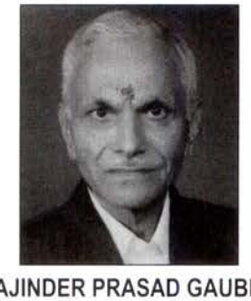

RAJINDER PRASAD GAUBHA

SHRI RAM

SUSHILA SHARMA

VIDHAWATI

VIR VIKRAM SETH

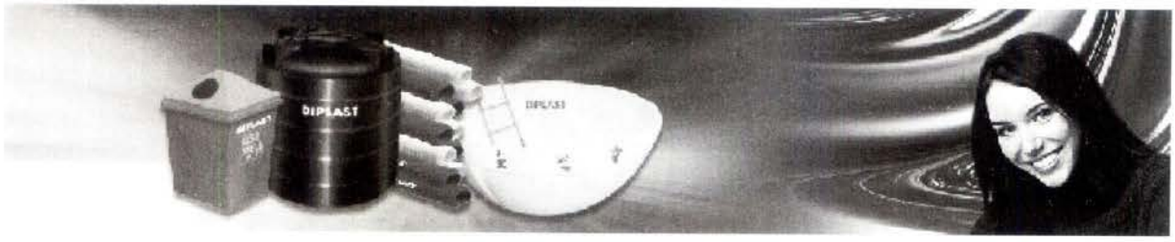

मजबूती में बे-मिसाल

घर का निर्माण डीप्लास्ट के साथ

40 years in service

DIPLAST
PLASTICS LIMITED
AN ISO 9001 COMPANY

C-36, Industrial Phase 2, S.A.S. Nagar, Mohali (Pb.) India
Phone : +91-172-2272942, 5098187, Fax : +91-172-2225224
E-mail : diplastplastic@yahoo.com, Web : www.diplast.com

QUALITY IS OUR STRENGTH

विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर–वधु की तलाश, प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये शुभ–अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/-, 75 words Rs. 100/-

Contact : Bhartendu Sood, # 231, Sector 45-A, Chandigarh-160047
Tel.: 0172-2662870, Mob.: +91-9217970381
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in